जैसे–जैसे चूजे बड़े होते हैं ब्रुडर के चारों ओर रखी हुई गार्ड दूर करते जाईये तथा अन्त में एक सप्ताह बाद पूर्णतया हटा दें। ब्रुडिंग के समय रोशनी का उचित प्रबंध करें । एक 40 वाट का बल्ब 6–7 फीट उचांई पर तथा 30 से.मी. के रिफ्लेक्टर सहित 100 वर्ग फिट के लिए काफी होता है। चौथे हफ्ते में चुजों की चोच काटिए उपर की चोंच को आधा काटकर नीचे की चोंच को केवल गर्म ब्लेड से थोड़ा घींस दीजिए। चोंच काटते समय चूजे की जीभ व अपनी ऊंगलियां का ध्यान रखिए। मरे हुए प्रत्येक पक्षी का पोस्टमार्टम तथा उन्हें जला कर अथवा गहरे गड्ढे में दबाकर नष्ट करना आवश्यक है।

मुर्गी पालन हेतु टीकाकरण –

- 0–2 दिन – मेरेक्स बीमारी (हेचरी से ही लगकर)
- 5–7 दिन – रानीखेत – (नाक, मुँह, पीने के पानी में)
- 14–15 दिन – आई.बी.डी. (मुँह व पानी में)
- 4–5 सप्ताह – फाउल पॉक्स (डेने की खाल भेदन)
- 5–8 सप्ताह – रानीखेत आर 2 बी (इन्ट्रा मस्क्यूलर)
- 14 सप्ताह – फाउल पॉक्स (डेने की खाल भेदन)
- 15 सप्ताह – आर 2 बी (इन्ट्रा मस्क्यूलर)

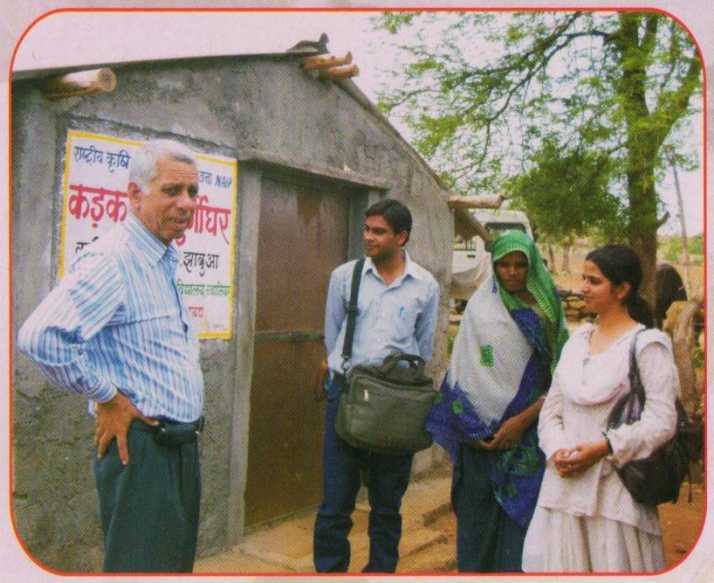

राकृनप
NAIP

कड़कनाथ मुर्गी पालन

राष्ट्रीय कृषि नवोन्मेषी परियोजना

सहयोगी संस्था – ग्रामीण विकास ट्रस्ट, झाबुआ

राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर

आई. जी. एफ. आर. आय., झांसी

ग्रामीण विकास ट्रस्ट

शिव विला, रामकृष्ण नगर, झाबुआ (म.प्र.) 457661

Ph.: 07392-243555, Fax : 07392-244289

e-mail : gvtjhabua@rediffmail.com

कड़कनाथ मुर्गीपालन

परिचय –

कड़कनाथ झाबुआ व धार जिले में पाई जाने वालर देशी प्रजाति है। इस प्रजाति को क्षेत्र में काला मांसी के नाम से जाना जाता है, इसके अंडे हल्के भूरे, चमकदार तथा मोटी परत के होते हैं । यह एक बलि की जाती है और आदिवासी लोग इसे देवीमाँ की बहल चढ़ाने में भी उपयोग करते हैं। इसका ब्लड क्रोनोनिक बीमारी में उपयोग होता है। इसका मांस कामोत्तेजक (Aphrodisiac) होता है।

कड़कनाथ मुर्गियों की विशेषताएँ –

शारीरिक विशेषताएँ – प्रजातियाँ – पेंसिल, सिल्वर, गोल्डन

आर्थिक विशेषताएँ – अंडा उत्पादन 100–105 प्रतिवर्ष 40 सप्ताह की आयु के प श्चात
अंडे का वजन 49-52 ग्राम
नर कड़कनाथ का वजन – 1–1.50 कि.ग्रा. (3 – 6 महीन में)
मादा कड़कनाथ का वजन – 800 ग्राम – 1 कि.ग्रा. (3 – 6 महीन में)
20 सप्ताह में वजन 920 ग्राम

मांस की पोषकता – प्रोटीन – 25.47 % (अधिकतम)
वसा – 3–4% (न्यूनतम)
पानी – 70.33 %
फर्टिलिटी – 55 %
हेचिसीलिटी एफ.ई.एस. – 52 %

इस जाति का काला रंग का कारण इसमें हीमोग्लोबीन व मैलेनीन की अधिकता

मांस उत्पादन हेतु मुर्गी पालन के लिए निम्न बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए –

1. मुर्गीघर की व्यवस्था
1. स्वस्थ चूजों की व्यवस्था करना
2. संतुलित एवं पोषक आहार
3. जैविक सुरक्षा एवं रोग नियंत्रण
4. समुचित बाजार व्यवस्था
5. वैज्ञानिक जानकारी एवं प्रशिक्षण

मुर्गी घर हेतु ध्यान रखने योग्य बातें –

मुर्गीपालन प्रारंभ करने के लिए सबसे पहली चीज जो देखनी होती है, वह है मुर्गीघर की व्यवस्था करना। मुर्गी घर के लिए भूमि ऐसी जगह लेनी चाहिए जो दूसरे मुर्गी फार्मों से दूरी पर हो ताकि रोगों की संक्रमता से बचा जा सके। स्थान निचली या पानी रुकने वाली जगह पर न हो तथा भूमि का स्तर उँचा हो जिससे पानी निकासी अच्छी तरह से हो सके प ानी स्वच्छ व पर्याप्त मात्रा में निरंतर उपलब्ध हो। बिजली की अबाधित आपूर्ति होनी चाहिए। बिक्री केन्द्र व कुक्कुट आहार की सुलभता होनी चाहिए। मुर्गी फार्म तक यातायात का अच्छा प्रबंध होना चाहिए। मुर्गीघर बनाते समय यह पूर्व/पश्चिम दिशा की ओर आमुख होना चाहिए।

मुर्गी घर में चूजे डालने से पूर्व ध्यान रखने योग्य बातें –

घर के अं दर का सब सामान खाद्य व पानी के बर्तन इत्यादि को बाहर निकालकर 40 प्रतिशत कास्टीक सोडा के घोल से धुलाई करें । पुराना बिछावन (लिटर) बाहर निकालें। घर के अं दर व बाहर की सब जगहों की विशेषतया कोनो को रगड़ कर धूल व गंदगी साफ करें। घर की प्रथम धुलाई 40 प्रतिशत कास्टीक सोडे के घोल से तथा दूसरी बार किसी अच्छे जीवाणु नाशक जैसे फीनोल इत्यादि से होनी चाहिए धुलाई में घर की छत, जालियाँ तथा गन्दा पानी बाहर जाने की जगह का विशेष ध्यान देना चाहिए। फ्लेम गन (जलाने की मशीन) द्वारा फर्श, दीवार व कोनों में जलाकर कीटाणू नष्ट करें। मैलाथियोन या योमिथियोन के 1 प्रतिशत घोल को मुर्गीघर मे छिड़काव कीजिए। चूने से दीवार छत व फर्श की पुताई करें। लकड़ी के स ब आकारों की किसी अच्छे मोटे रंग से रंगाई करें। चूजे आने से 2–3 सप्ताह पूर्व घर की सफाई करके खाली रखिए। घर के प्रत्येक भाग यानी जाली दिवार, छत,फर्श आदि की टूट–फूट की मरम्मत करें ताकि बरसाती पानी अथवा जंगली जानवर बाह्य पक्षी व चूहो का अंदर आने से रोका जा सके।

नया लकड़ी का बुरादा अथवा धान के छिलके का 3–5 से.मी. मोटी परत का बिछावन (लिटर) तैयार करें । साफ किए हुए घर के सब सामान जैसे ब्रूंडर, खाने व पानी के बर्तन, गार्ड इत्यादि को घर में उचित स्थान पर लगा लें। घर के कोनों को गार्ड अथवा अन्य किसी प्रकार से गोलाकार कीजिए ताकि चूजों को कोने में इकट्ठा होने से रोका जा सके। स्वचलित थर्मो स्टेट द्वारा नियंत्रित ब्रुडर का ही प्रयोग करें। आज कल इन्फ्रारेड किस्म के लेम्प भी ब्रुडिंग के लिए उपयोग किया जा सके।

मुर्गी घर में चूजे डालने से बाद ध्यान रखने योग्य बातें –

प्रत्येक बाक्स पर लिखें चूजों की संख्या व वास्तविक गिनती को मिलाईये तथा बाक्स के उ पर लिखें सभी निर्देश ध्यान से पढ़िये। चूजो की सावधानी से गिनती करके छो ड़ें। चूजों को हमेशा खाद्य व स्वच्छ पानी दीजिए।